أَلَمۡ تَرَ إِلَى ٱلَّذِينَ قِيلَ لَهُمۡ كُفُّوٓاْ أَيۡدِيَكُمۡ وَأَقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ
وَءَاتُواْ ٱلزَّكَوٰةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيۡهِمُ ٱلۡقِتَالُ إِذَا فَرِيقٞ مِّنۡهُمۡ
يَخۡشَوۡنَ ٱلنَّاسَ كَخَشۡيَةِ ٱللَّهِ أَوۡ أَشَدَّ خَشۡيَةٗۚ وَقَالُواْ رَبَّنَا لِمَ
كَتَبۡتَ عَلَيۡنَا ٱلۡقِتَالَ لَوۡلَآ أَخَّرۡتَنَآ إِلَىٰٓ أَجَلٖ قَرِيبٖۗ قُلۡ مَتَٰعُ
ٱلدُّنۡيَا قَلِيلٞ وَٱلۡأٓخِرَةُ خَيۡرٞ لِّمَنِ ٱتَّقَىٰ وَلَا تُظۡلَمُونَ فَتِيلًا ٧٧
أَيۡنَمَا تَكُونُواْ يُدۡرِككُّمُ ٱلۡمَوۡتُ وَلَوۡ كُنتُمۡ فِي بُرُوجٖ
مُّشَيَّدَةٖۗ وَإِن تُصِبۡهُمۡ حَسَنَةٞ يَقُولُواْ هَٰذِهِۦ مِنۡ عِندِ ٱللَّهِۖ
وَإِن تُصِبۡهُمۡ سَيِّئَةٞ يَقُولُواْ هَٰذِهِۦ مِنۡ عِندِكَۚ قُلۡ كُلّٞ مِّنۡ
عِندِ ٱللَّهِۖ فَمَالِ هَٰٓؤُلَآءِ ٱلۡقَوۡمِ لَا يَكَادُونَ يَفۡقَهُونَ
حَدِيثٗا ٧٨ مَّآ أَصَابَكَ مِنۡ حَسَنَةٖ فَمِنَ ٱللَّهِۖ وَمَآ أَصَابَكَ مِن
سَيِّئَةٖ فَمِن نَّفۡسِكَۚ وَأَرۡسَلۡنَٰكَ لِلنَّاسِ رَسُولٗاۚ وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ
شَهِيدٗا ٧٩ مَّن يُطِعِ ٱلرَّسُولَ فَقَدۡ أَطَاعَ ٱللَّهَۖ وَمَن تَوَلَّىٰ فَمَآ
أَرۡسَلۡنَٰكَ عَلَيۡهِمۡ حَفِيظٗا ٨٠ وَيَقُولُونَ طَاعَةٞ فَإِذَا بَرَزُواْ مِنۡ
عِندِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٞ مِّنۡهُمۡ غَيۡرَ ٱلَّذِي تَقُولُۖ وَٱللَّهُ يَكۡتُبُ
مَا يُبَيِّتُونَۖ فَأَعۡرِضۡ عَنۡهُمۡ وَتَوَكَّلۡ عَلَى ٱللَّهِۚ وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ
وَكِيلًا ٨١ أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ ٱلۡقُرۡءَانَۚ وَلَوۡ كَانَ مِنۡ عِندِ غَيۡرِ
ٱللَّهِ لَوَجَدُواْ فِيهِ ٱخۡتِلَٰفٗا كَثِيرٗا ٨٢ وَإِذَا جَآءَهُمۡ أَمۡرٞ مِّنَ
ٱلۡأَمۡنِ أَوِ ٱلۡخَوۡفِ أَذَاعُواْ بِهِۦۖ وَلَوۡ رَدُّوهُ إِلَى ٱلرَّسُولِ وَإِلَىٰٓ
أُوْلِي ٱلۡأَمۡرِ مِنۡهُمۡ لَعَلِمَهُ ٱلَّذِينَ يَسۡتَنۢبِطُونَهُۥ مِنۡهُمۡۗ وَلَوۡلَا

فَضْلُ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُۥ لَٱتَّبَعْتُمُ ٱلشَّيْطَٰنَ إِلَّا
قَلِيلًا ﴿٨٣﴾ فَقَٰتِلْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ ۚ وَحَرِّضِ
ٱلْمُؤْمِنِينَ ۖ عَسَى ٱللَّهُ أَن يَكُفَّ بَأْسَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ۚ وَٱللَّهُ
أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنكِيلًا ﴿٨٤﴾ مَّن يَشْفَعْ شَفَٰعَةً حَسَنَةً يَكُن
لَّهُۥ نَصِيبٌ مِّنْهَا ۖ وَمَن يَشْفَعْ شَفَٰعَةً سَيِّئَةً يَكُن لَّهُۥ كِفْلٌ
مِّنْهَا ۗ وَكَانَ ٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ مُّقِيتًا ﴿٨٥﴾ وَإِذَا حُيِّيتُم بِتَحِيَّةٍ
فَحَيُّوا۟ بِأَحْسَنَ مِنْهَآ أَوْ رُدُّوهَا ۗ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ
حَسِيبًا ﴿٨٦﴾ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ
لَا رَيْبَ فِيهِ ۗ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ ٱللَّهِ حَدِيثًا ﴿٨٧﴾

Theme	
Fear Allah and not the people. There is no escape from death. Obedience of the Rasool is in fact the obedience of Allah. Proof that the Qur'an is Divine revelation. Report the important news to responsible persons. Respond to greetings with even better greetings.	अल्लाह से डरो, लोगों से नहीं। मौत से फ़रार मुमकिन नहीं। रसूल की इताअत दरहक़ीक़त अल्लाह की इताअत है। क़ुरआन के वह्य-ए-इलाही होने का सुबूत। अहम ख़बरों को ज़िम्मेदार अफ़राद तक पहुँचाओ। सलाम का जवाब उससे भी बेहतर सलाम के साथ दो।
Tarjumani	
Have you not seen those who were told to restrain their hands from fighting, establish Salah (prayers) and pay Zakah (obligatory charity). Now, when at length, they are commanded to fight, lo! A group of them fear people as they should have	तुमने उन लोगों को भी देखा जिनसे कहा गया था कि अपने हाथ रोके रखो और नमाज़ कायम करो और ज़कात दो? अब जो उन्हें लड़ाई का हुक्म दिया गया तो उनमें से एक फ़रीक़ का हाल यह है कि लोगों से ऐसा डर रहे हैं जैसा ख़ुदा से डरना चाहिए या

feared Allah, or even more than that, and say: "Our Rabb! Why have You ordered us to fight? Could you delay its implementation for a while?" Tell them: "The enjoyment of this worldly life is short, life of the hereafter is much better for those who fear Allah, and rest assured that you will not be wronged equal to the fiber of a date-stone. As for death, no matter where you may be, death is going to reach you even if you are in fortified towers. When such people are blessed with some benefit, they say: "This is from Allah;" but if they suffer a loss, they say: "this is because of you." O Muhammad tell them: "Everything is from Allah." What is the matter with these people that they do not understand a word? Whatever benefit comes to you O people, it is by Allah's grace; and whatever loss you suffer, it is the result of your own doings. We have sent you, O Muhammad, as a Rasool to mankind. Allah is your All-Sufficient Witness. Anyone who obeys the Rasool, in fact, obeys Allah. As for those who pay no heed, they should know that We have not sent you as a taskmaster over them. They will say: "We are at your service!" Yet, when they leave you, some of them meet together secretly at night to plot against what

कुछ उससे भी बढ़कर | कहते हैं खुदाया, यह हमपर लड़ाई का हुक्म क्यों लिख दिया? क्यों न हमें अभी कुछ और मुहलत दी? इनसे कहो, दुनिया का सरमायए-ज़िन्दगी थोड़ा है, और आख़िरत एक खुदातरस इनसान के लिए ज़्यादा बेहतर है, और तुमपर ज़ुल्म एक शम्मा बराबर भी न किया जाएगा | रही मौत, तो जहाँ भी तुम हो वह बहरहाल तुम्हें आकर रहेगी खाह तुम कैसी ही मज़बूत इमारतों में हो | अगर उन्हें कोई फ़ायदा पहुँचता है तो कहते हैं | यह अल्लाह की तरफ़ से है, और अगर कोई नुकसान पहुँचता है तो कहते हैं कि ऐ नबी, यह आपकी बदौलत है | कहो, सब कुछ अल्लाह ही की तरफ़ से है | आख़िर इन लोगों को क्या हो गया है कि कोई बात उनकी समझ में नहीं आती | ऐ इनसान तुझे जो भलाई भी हासिल होती है अल्लाह की इनायत से होती है, और जो मुसीबत तुमपर आती है वह तेरे अपने कस्ब व अमल की बदौलत है | ऐ मुहम्मद, हमने तुमको लोगों के लिए रसूल बनाकर भेजा है और उसपर ख़ुदा की गवाही काफ़ी है | जिसने रसूल की इताअत की उसने दरअसल ख़ुदा की इताअत की | और जो मुँह मोड़ गया, तो बहरहाल हमने तुम्हें उन लोगों पर पासबान बनाकर तो नहीं भेजा है | वे मुँह पर कहते हैं कि हम मुतीये-फ़रमान हैं | मगर जब तुम्हारे पास से निकलते हैं तो उनमें से एक गरोह रातों को जमा होकर तुम्हारी बातों के ख़िलाफ़ मशविरे करता है | अल्लाह उनकी ये सारी सरगोशियाँ लिख रहा है | तुम उनकी परवाह न करो और अल्लाह पर भरोसा रखो, वही भरोसे के लिए काफ़ी है | क्या ये लोग

you have said. Allah notes down all their plots. Therefore, leave them alone and put your trust in Allah. Allah is your all sufficient trustee. Why don't they research the Qur'an? Don't they realize that if it was from someone other than Allah, they would find many discrepancies in it. Whenever they hear news of peace or of danger, they spread it quickly; but if they would report it to the Rasool and to the responsible people among them, it would come to the knowledge of those who could draw the right conclusions. If it had not been for Allah's grace and mercy, all of you with the exception of a few, would have followed Shaitan. Therefore, O Muhammad, fight in the path of Allah, you are accountable for no one except for yourself. Urge the believers to fight, it may be that Allah will overthrow the might of the unbelievers, for Allah is the strongest in might and severe in punishment. Anyone who intercedes for a good cause shall have a share in it, and anyone who intercedes for an evil cause shall also get a share in its burden. Allah has control over everything. When anyone greets you in a courteous manner, let your greetings be better than his or at least return the same. Allah keeps account of every-thing. Allah! There is no god but He. He

कुरआन पर गौर नहीं करते? अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो इसमें बहुत कुछ इखतिलाफ बयानी पाई जाती | ये लोग जहाँ कोई इत्मीनानबख्श या खौफ़नाक ख़बर सुन पाते हैं उसे लेकर फैला देते हैं, हालाँकि अगर ये उसे रसूल और अपनी जमाअत के ज़िम्मेदार असहाब तक पहुँचाएँ तो वह ऐसे लोगों के इल्म में आ जाए जो इनके दरमियान इस बात की सलाहियत रखते हैं कि उससे सही नतीजा अख्ज़ कर सकें | तुम लोगों पर अल्लाह की मेहरबानी और रहमत न होती तो (तुम्हारी कमज़ोरियाँ ऐसी थीं कि) मादूदे-चन्द के सिवा तुम सब शैतान के पीछे लग गए होते | पस ऐ नबी, तुम अल्लाह की राह में लड़ो, तुम अपनी ज़ात के सिवा किसी और के लिए ज़िम्मेदार नहीं हो | अलबत्ता अहले-ईमान को लड़ने के लिए उकसाओ, बईद नहीं कि अल्लाह काफ़िरों का ज़ोर तोड़ दे, अल्लाह का ज़ोर सबसे ज़्यादा ज़बरदस्त और उसकी सज़ा सबसे ज़्यादा सख्त है | जो भलाई की सिफ़ारिश करेगा वह उसमें से हिस्सा पाएगा और जो बुराई की सिफ़ारिश करेगा वह उसमें से हिस्सा पाएगा, और अल्लाह हर चीज़ पर नज़र रखनेवाला है | और जब कोई एहतिराम के साथ तुम्हें सलाम करे तो उसको उससे बेहतर तरीक़े के साथ जवाब दो या कम-अज़-कम उसी तरह, अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेनेवाला है | अल्लाह वह है जिसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है, वह तुम सबको उस क़ियामत के दिन जमा करेगा जिसके आने में कोई शुब्हा नहीं, और अल्लाह की बात से बढ़कर सच्ची बात और किसकी हो सकती

will certainly gather you all together on the Day of Resurrection; there is no doubt in it, and who can be more truthful in his words than Allah?	है।
Tafsir	